Result Mitra Daily Magazine

भूमि क्षरण पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट

❖ हालिया संदर्भ :

- हाल ही में संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी एक रिपोर्ट में पाया गया है कि "भूमि ksh" (Land Segradation) पृथ्वी की मानवता को बनाए रखने की क्षमता को कम कर रहा है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए चुनौतियां उत्पन्न हो सकती है।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी रिपोर्ट का शीर्षक "स्टेपिंग बैक फ्रॉम द प्रिंसिपल, ट्रांसफॉर्मिंग लैंड मैनेजमेंट टू स्टे इन प्लेनेटरी" में कहा गया है कि वर्तमान में प्रत्येक वर्ष वैश्विक स्तर पर लगभग 10 लाख वर्ग किलोमीटर भूमि का क्षरण हो रहा है।
- इस रिपोर्ट में कहा गया है कि पृथ्वी का अनुमानत: 15 मिलियन वर्ग किलोमीटर भूमि का क्षरण पहले ही हो चुका है।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी इस रिपोर्ट को जर्मनी के पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इंपैक्ट रिसर्च के सहयोग से संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन टू कॉम्बैट डेजर्टिफिकेशन (UNCCD)द्वारा तैयार किया गया है।
- UNCCD पृथ्वी पर मरुस्थलीकरण और सूखे के प्रभावों को संबोधित करने के लिए एक कानूनी रूप से बाध्यकारी ढांचा है।
- इस रिपोर्ट को सऊदी अरब के रियाद शहर में UNCCD के कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज (COP–16) के 16वें सत्र के दौरान प्रकाशित किया गया था।

❖ भूमि क्षरण या भूमि निम्नीकरण क्या है ?

- भूमि क्षरण या भूमि निम्नीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मानवीय गतिविधियों या प्राकृतिक परिस्थितियों के संयोजन के फलस्वरुप भूमि को अस्वस्थ और कम उत्पादक बनाता है।
- UNCCD के अनुसार भूमि क्षरण मुख्य रूप से भूमि उपयोग और अस्थिर भूमि प्रबंधन प्रथाएं के दबावों के संयोजन के फलस्वरुप वर्षा आधारित फसल, सिंचित फसल भूमि, चारागाह, वन और वुडलैंड्स की जैविक या आर्थिक उत्पादकता और जटिलता में कमी या हानि पहुंचाता है।
- भूमि क्षरण पृथ्वी के चारों ओर मनुष्यों और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
- जलवायु परिवर्तन पर अंतर–सरकारी पैनल की वर्ष 2019 की जलवायु परिवर्तन और भूमि पर विशेष रिपोर्ट के अनुसार पृथ्वी के बर्फ मुक्त भूमि क्षेत्र का लगभग एक चौथाई हिस्सा मानव–प्रेरित गतिविधियों के कारण भूमि–क्षरण से प्रेरित है।
- कृषि क्षेत्रों से भूमि क्षरण वर्तमान में मिट्टी निर्माण दर की तुलना में 11 से 20 गुना अधिक होने का अनुमान है।
- संयुक्त राष्ट्र अनुमान के अनुसार दुनिया भर में लगभग 30% भूमि क्षरित हो चुकी है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण का स्तर बहुत बढ़ चुका है।
- संयुक्त राष्ट्र के 2021 के अनुमान के अनुसार, अफ्रीका के दो–तिहाई उत्पादक भूमि क्षेत्र भूमि–क्षरण से गंभीर रूप से प्रभावित है।
- भूमि–क्षरण के सभी प्रकार मानव गतिविधियों के कारण होते हैं, जिनमें मिट्टी का कटाव, मिट्टी का प्रदूषण, मिट्टी का अम्लीकरण, गाद जमना, शुष्कीकरण और लवणीकरण प्रमुख है।

❖ भूमि–क्षरण के कारण :

➢ कृषि गतिविधियां

- कृषि की ऐसी गतिविधियां जो फसल कटाई के बाद मिट्टी को खुला छोड़ देती है, जिससे मिट्टी के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं।
- एकल कृषि स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को अस्थिर करती है।
- पशुओं के अतिचारण
- अनुचित सिंचाई

➢ जलवायु परिवर्तन

- जलवायु परिवर्तन विशेषकर तटीय क्षेत्रों, नदी डेल्टाओं, शुष्क भूमि और पर्माफ्रॉस्ट क्षेत्रों में भूमि क्षरण बढ़ाने के लिए जिम्मेदार होती है।

❖ भूमि क्षरण चिंता का विषय क्यों है ?

- भूमि क्षरण मनुष्यों और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
- भूमि क्षरण खाद्य उत्पादन की गुणवत्ता सहित उसके उत्पादन की मात्रा को कम करके कुपोषण का खतरा बढ़ाता है।
- भूमि क्षरण जल और खाद्य जनित बीमारियों के प्रसार में योगदान देता है, जो स्वच्छ पानी की कमी के परिणामस्वरुप उत्पन्न होता है।
- मिट्टी का कटाव श्वसन संबंधी बीमारियों को बढ़ावा देता है।
- भूमि क्षरण के कारण समुद्री और मीठे पानी की प्रणालियां भी प्रभावित होती है।
- भूमि क्षरण के कारण उर्वरकों और कीटनाशकों को ले जाने वाली मिट्टी जल निकायों में चली जाती है, जो जल में रहने वाले जीव–जंतुओं और उन पर निर्भर स्थानीय समुदाय दोनों के लिए नुकसानदायक साबित होता है।
- भूमि क्षरण जलवायु परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है, क्योंकि मिट्टी सबसे बड़ा स्थलीय कार्बन सिंक है।
- जब भूमि क्षरण होता है तो मिट्टी के अंदर दबे नाइट्रस ऑक्साइड के साथ कार्बन वायुमंडल में फैल जाता है, जो ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने के लिए जिम्मेदार होती है।
- संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार भूमि क्षरण के कारण पिछले दशक में मानव जनित कार्बन–डाइऑक्साइड को अवशोषित करने के लिए पेड़ों और मिट्टी जैसी भूमि पारिस्थितिकी क्षमता को 20% तक कम कर दिया।

❖ भूमि निम्नीकरण से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र :

- संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार भूमि क्षरण से दक्षिण एशिया, उत्तरी चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका के उच्च मैदान, कैलिफोर्निया और भूमध्य सागर जैसे शुष्क क्षेत्र हॉटस्पॉट बन गए हैं।
- भूमि क्षरण का प्रभाव उष्णकटिबंधीय और शुष्क क्षेत्रों में केंद्रित है।

❖ UNCCD :

- UNCCD (United Nations Convention to Combat Desertification) यानि संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय, मरुस्थलीकरण से लड़ने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय अभिसमय है।
- इस अभिसमय का मसौदा 17 जून 1994 को तैयार किया गया तथा 14 अक्टूबर 1994 को पेरिस में हस्ताक्षर के बाद लागू हुआ।

- इस अभिसमय का मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझेदारी व्यवस्थाओं के द्वारा सूखे और मरुस्थलीकरण के गंभीर समस्याओं से जूझ रहे देशों में इन समस्याओं के प्रभाव को कम करना है।
- UNCCD के प्रावधानों के अनुसार, इसकी हस्ताक्षरकर्ता देशों को मरुस्थलीकरण और सूखेपन की भौतिक, जैविक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं से निपटने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने की बात कही गई।

❖ इतिहास :

- ❖ UNCCD की स्थापना का इतिहास वर्ष 1977 की मरुस्थलीकरण पर पहले संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन से जुड़ा है, जिसमें मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए कार्य योजना को अपनाया गया था।
- ❖ वर्ष 1991 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) ने एक निष्कर्ष निकाला, जिसमें कहा गया कि वैश्विक स्तर पर शुष्क, अर्द्ध–शुष्क और शुष्क उप–आर्द्र क्षेत्रों में भूमि क्षरण की समस्या तीव्र हो गई है।
- ❖ वर्ष 1992 के रियो–डी–जेनेरियो में आयोजित पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, जिसे "पृथ्वी शिखर सम्मेलन" भी कहा जाता है, में मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए व्यापक चर्चा हुई एवं मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए एक अंतर–सरकारी वार्ता समिति (INCD) की स्थापना का आह्वान किया गया।
- ❖ इसी क्रम में दिसंबर 1992 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रस्ताव पास करके 1994 में UNCCD की स्थापना की गई।
- ❖ इस कन्वेंशन के विश्व के 197 देश पक्षकार हैं।

पार्टियों का सम्मेलन (COP) जो इस कन्वेंशन का शासी निकाय है, ने अपना पहला सत्र वर्ष 1997 में रोम (इटली) में आयोजित किया गया।